# इकाई 1 राजनीतिक सिद्धांत क्या है: दो दृष्टिकोण– मानक और अनुभवजन्य*

**संरचना**


1.0 उद्देश्य

1.1 परिचय

1.2 राजनीतिक सिद्धांत और अन्य पारस्परिक शर्तें

1.3 राजनीतिक सिद्धांत का विकास

1.4 राजनीतिक सिद्धांत की परिभाषा की दिशा में

1.5 मूल सैद्धांतिक अवधारणाओं के महत्व

1.5.1 क्या राजनीतिक सिद्धांत मृत हो चुका है?

1.5.2 राजनीतिक सिद्धांत का पुनरुत्थान

1.6 राजनीतिक सिद्धांत के दृष्टिकोण

1.6.1 ऐतिहासिक दृष्टिकोण

1.6.2 मानक अथवा निर्देशात्मक दृष्टिकोण

1.6.3 अनुभवजन्य दृष्टिकोण

1.6.4 समकालीन दृष्टिकोण

1.7 सारांश

1.8 संदर्भ

1.9 बोध प्रश्नों के उत्तर


## 1.0 उद्देश्य

यह इकाई राजनीतिक सिद्धांत की आवश्यकता से संबंधित है।

इस इकाई के माध्यम से आप यह जानने में सक्षम होंगे कि:

- अन्य समान शर्तों से राजनीतिक सिद्धांत अलग है;
- क्या राजनीतिक सिद्धांत मृत हो चुका है, इसका परीक्षण; तथा
- राजनीतिक सिद्धांत का अध्ययन करने के लिए विभिन्न दृष्टिकोणों से परिचय।

## 1.1 परिचय

राजनीतिक सिद्धांत राजनीतिक विज्ञान के मूल क्षेत्रों में से एक है। शैक्षणिक अनुशासन के रूप में राजनीतिक सिद्धांत बिलकुल हाल ही में उभर कर आया है। इससे पहले इस उद्यम में जो लोग शामिल थे, वे खुद को दार्शनिक अथवा वैज्ञानिक मानते थे। बौद्धिक परम्परा, जो कि तत्काल व्यावहारिक चिंता के क्षेत्र को बढ़ा देते हैं, के लिए राजनीतिक सिद्धांत एक उपयुक्त शब्द है और यह लोगों के सामाजिक रूप से सह-अस्तित्व को महत्वपूर्ण परिप्रेक्ष्य में देखता है। राजनीतिक सिद्धांत पूरी तरह से राजनीतिक विज्ञान था और सिद्धांत के बिना विज्ञान नहीं हो सकता। अतः राजनीतिक सिद्धांत वैध रूप से और सटीक रूप से राजनीतिक विज्ञान के पर्यायवाची के रूप में उपयोग किया जा सकता है।


*डॉ. राजेन्द्र दयाल और डॉ. सतीश कुमार झा, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

## 1.2 राजनीतिक सिद्धांत और अन्य पारस्परिक सम्बन्ध

राजनीतिक सिद्धांत और उसके समानार्थी शब्दों जैसे राजनीतिक विज्ञान, राजनीतिक दर्शन और राजनीतिक विचारधारा के बीच अंतर किया जा सकता है, यद्यपि बहुत से लोग विनिमेयता के अनुसार व्यवहार करते हैं। राजनीतिक सिद्धांत और राजनीतिक विज्ञान के बीच भेदभाव आधुनिक विज्ञान द्वारा बौद्धिक धारणाओं में सामान्य बदलाव के कारण उत्पन्न होता है। राजनीतिक विज्ञान ने राजनीति और राजनीतिक व्यवहार के बारे में व्यावहारिक सामान्यीकरण और कानून प्रदान करने की कोशिश की है।

राजनीतिक सिद्धांत राजनीतिक घटनाओं और संस्थानों और वास्तविक राजनीतिक व्यवहार पर दार्शनिक या नैतिक मानदंड को दर्शाता है।

एक अच्छी राजनीतिक व्यवस्था में प्रश्न उठना महत्वपूर्ण है जो कि एक बड़ा और अधिक मौलिक प्रश्न का हिस्सा है; मुख्य रूप से जीवन के आदर्श रूप को मनुष्य को बड़े समुदाय के अंदर विस्तार करना चाहिए।

तत्काल और स्थानीय प्रश्नों के उत्तर देने की प्रक्रिया में, यह स्थायी मुद्दों को संबोधित करता है, यही कारण है कि शास्त्रीय ग्रंथों का अध्ययन अभ्यास का एक महत्वपूर्ण घटक बनता है। राजनीतिक सिद्धांत के महान ग्रंथों में शानदार कार्यों की बात करें तो इसमें ज़रूरी महान साहित्यिक कार्य मिल जायेंगे, जो कि स्थानीय मामलों के बावजूद, जीवन और समाज की स्थाई समस्याओं से निपटता है। इसमें शाश्वत ज्ञान की उत्कृष्टता शामिल है और यह किसी भी संस्कृति, स्थान, लोगों या काल की विरासत नहीं है, बल्कि पूरी मानव जाति से सम्बंधित है।

विशिष्ट राजनीतिक सिद्धांतों को किसी घटना की सही या अंतिम समझ के रूप में नहीं माना जा सकता है। एक घटना का अर्थ नए दृष्टिकोण से हमेशा भविष्य की व्याख्याओं के लिए खुला रहता है। प्रत्येक की व्याख्या और विश्लेषण एक विशेष दृष्टिकोण या राजनीतिक जीवन से सम्बंधित होती हैं।

इसके अलावा, राजनीतिक सिद्धांत इसकी समीक्षा करने के प्रयासों में लगा रहता है, ताकि एक ऐसा राजनीतिक स्पष्टीकरण स्थापित किया जा सके जो सामान्य लोगों से ऊपर हो सके। राजनीतिक सिद्धांत और राजनीतिक विज्ञान के बीच कोई तनाव नहीं है, क्यूंकि वे अपनी सीमाओं और अधिकार क्षेत्र की शर्तों को अलग अलग निर्वाह करते हैं और टकराव उनके उद्देश्य में नहीं है। राजनीतिक सिद्धांत विश्लेषण, विवरण, स्पष्टीकरण और आलोचना के उद्देश्य के लिए विचारों, अवधारणाओं और सिद्धांतों की आपूर्ति करता है, जो कि वापस रानजीतिक विज्ञान में समाविष्ट हो जाते हैं।

राजनीतिक दर्शन प्रश्नों के सामान्य उत्तर प्रदान करता है जैसे कि न्याय क्या है और विभिन्न अन्य अवधारणाओं से भी संबंधित है, क्या है और क्या होना चाहिए में भी यह भेद करने के साथ साथ राजनीति के बड़े मुद्दे से जुड़े प्रश्नों के सामान्य उत्तर प्रदान करता है। राजनीतिक दर्शन आदर्श राजनीतिक सिद्धांत का एक हिस्सा है, क्योंकि यह अवधारणाओं के बीच अंतर-संबंध स्थापित करने का प्रयास करता है। शायद यह कहना सही होगा कि हर राजनीतिक दार्शनिक एक सिद्धांतवादी है, हालांकि हर राजनीतिक सिद्धांतवादी राजनीतिक दार्शनिक नहीं है। राजनीतिक दर्शन एक जटिल गतिविधि है, जो कि बिलकुल सही तरह से इस बात से समझी जा सकती है कि अनेक बड़े बड़े विशेषज्ञ विभिन्न विश्लेषण के लिए इसका अभ्यास करते हैं।

कोई भी दार्शनिक और किसी भी ऐतिहासिक युग से भी निष्कर्षात्मक रूप से ये परिभाषित नहीं कर सकता, हम इसका तात्पर्य कला के सन्दर्भ में ले सकते हैं कि कला के किसी भी कलाकार या कला के स्कूल से कहीं ज्यादा बढ़कर अभ्यास किया गया है।

राजनीतिक विचार पूरे समुदाय का विचार है जिसमें पेशेवर राजनेता, राजनीतिक टिप्पणीकार, समाज सुधारक और समुदाय के साधारण व्यक्ति जैसे स्पष्ट वर्गों के भाषणों के लेखन शामिल हैं।

विचार राजनीतिक ग्रंथों, विद्वानों के लेख, भाषण, सरकारी नीतियों और निर्णयों और कविताओं और गद्य के रूप में भी हो सकता है जो लोगों की व्यथा को प्रकट करते हैं। विचार समयबद्ध होते हैं, उदाहरण के लिए, बीसवीं शताब्दी का इतिहास। संक्षेप में, राजनीतिक विचारों में ऐसे सिद्धांत शामिल हैं जो राजनीतिक व्यवहार और मूल्यों का मूल्यांकन करने और इसे नियंत्रित करने के तरीकों को समझाने का प्रयास करते हैं।

राजनीतिक सिद्धांत, विचार के विपरीत, एक व्यक्ति द्वारा अटकलों को संदर्भित करता है, जिसे हम स्पष्टीकरण के मॉडल के रूप में ग्रंथों में व्यक्त करते हैं। इसमें राज्यों, कानून, प्रतिनिधित्व और चुनाव सहित संस्थानों के सिद्धांत शामिल हैं। सर्वेक्षण का तरीका तुलनात्मक और व्याख्यात्मक है। राजनीतिक सिद्धांत सामान्य राजनीतिक जीवन से उत्पन्न दृष्टिकोण और कार्यों को समझाने और किसी विशेष संदर्भ में उनके बारे में सामान्यीकृत करने का प्रयास करता है, यह राजनीतिक सिद्धांत अवधारणाओं और परिस्थितियों के बीच या उनके साथ संबंधों से सम्बंधित में है। राजनीतिक दर्शन राजनीतिक सिद्धांतों और अवधारणाओं के बीच संघर्ष को हल करने या समझने का प्रयास करता है, जो कि निर्धारित की गई परिस्थितियों में समान रूप से स्वीकार्य दिखाई दे सकता है।

राजनीतिक विचारधारा एक व्यवस्थित और सभी को समाविष्ट करने वाला सिद्धांत है, जो कि मानव प्रकृति और समाज के पूर्ण और सार्वभौमिक रूप से लागू सिद्धांत को प्राप्त करने के एक विस्तृत कार्यक्रम के साथ-साथ उसे प्राप्त करने का प्रयास करता है। जॉन लॉक को अक्सर आधुनिक विचारधाराओं के जनक के रूप में वर्णित किया जाता है।

मार्क्सवाद भी इस तरह की विचारधारा का एक शानदार उदाहरण है जिसका तात्पर्य इस कथन में अभिव्यक्त होता है कि दर्शन का उद्देश्य विश्व को बदलना है न कि केवल व्याख्या करना। सभी राजनीतिक विचारधारा राजनीतिक दर्शन है, लेकिन ये कहना कि सभी राजनीतिक दर्शन राजनीतिक विचारधारा है, सत्य नहीं होगा। बीसवीं शताब्दी में फासीवाद, नाज़ीवाद, साम्यवाद और उदारवाद जैसी कई विचारधाराएं देखी गई हैं। राजनीतिक विचारधारा का एक विशिष्ट गुण यह है कि, जो कि राजनीतिक दर्शन के विपरीत, यह एक आदर्श समाज का एहसास करने के अपने उद्देश्य के कारण महत्वपूर्ण मूल्यांकन को रोकता है और हतोत्साहित करता है।

गेमिने और सेबाइन के अनुसार, राजनीतिक विचारधारा राजनीतिक सिद्धांत की अस्वीकृति है क्योंकि विचारधारा हाल ही की उत्पत्ति है, और सकारात्मकता के प्रभाव के तहत व्यक्तिपरक, अविश्वसनीय मूल्य वरीयताओं पर आधारित है।

गेमिने, इसके अलावा, राजनीतिक सिद्धांतवादी से एक प्रचारण में भेद का उल्लेख करते हैं। उनके अनुसार, हालांकि उन्हें स्वयं मुद्दों की अच्छी समझ है, पूर्णतः तत्काल उठने वाले प्रश्नों का ज्ञान है।

इसके अलावा, जर्मिनो, प्लेटो की तरह मत और ज्ञान के बीच अंतर करते हैं, और बाद में निश्चित रूप से एक राजनीतिक सिद्धांतवादी का प्रारंभिक बिंदु हो जाता है। प्रत्येक

राजनीतिक सिद्धांतकार की दोहरी भूमिका होती है; एक वैज्ञानिक और एक दार्शनिक और जिस तरह से वह अपनी भूमिकाओं को विभाजित करता है, वह अपने स्वभाव और हितों पर निर्भर करेगा। केवल दो भूमिकाओं को जोड़कर वह ज्ञान के लिए एक सार्थक तरीके से योगदान कर सकता है। एक सिद्धांत का वैज्ञानिक घटक सुसंगत और महत्वपूर्ण दिखाई दे सकता है, अगर लेखक के पास राजनीतिक जीवन के उद्देश्य की पूर्वकल्पना है। दार्शनिक आधार इस तरीके से प्रकट होता है जिस तरीके से वास्तविकता को चित्रित किया गया है। राजनीतिक सिद्धांत निराशाजनक और अनिच्छुक है। एक विज्ञान के रूप में, यह अव्यक्त रूप से या स्पष्ट रूप से चित्रित किए जा रहे निर्णयों को पारित करने की कोशिश किए बिना राजनीतिक वास्तविकता का वर्णन करता है। एक दर्शन के रूप में, यह आचरण के नियमों को निर्धारित करता है जो समाज में सभी के लिए एक अच्छा जीवन सुरक्षित बनाएगा, न कि केवल कुछ व्यक्तियों या वर्गों के लिए।

सिद्धांतवादी, किसी भी देश या वर्ग या पार्टी की राजनीतिक व्यवस्था में व्यक्तिगत रुचि नहीं लेते। इस तरह की रुचि से रहित, वास्तविकता की उनकी दृष्टि और अच्छे जीवन की उनकी छवि को प्रभावित नहीं किया जाएगा, और न ही उनका सिद्धांत विशेष होगा। विचारधारा का लक्ष्य या उद्देश्य समाज में सत्ता की एक विशेष प्रणाली को न्यायसंगत बनाना है। विचारधारा एक इच्छुक मामला है, उनकी दिलचस्पी इस उम्मीद से होती है कि एक नयी सत्ता का बँटवारा उभर कर आएगा, इसलिए चीजों को उसी रूप में या यथास्थिति की आलोचना भी इसी कारण से की जाती है। अरुचिपूर्ण चीज़ों को करने के बजाय, हम तर्कसंगतता से प्यार करते हैं। निष्पक्ष रूप से व्यवहार के बजाय, हमारे पास वास्तविकता की एक विकृत तस्वीर है।

## 1.3 राजनीतिक सिद्धांत का विकास

राजनीतिक सिद्धांत में विकास हमेशा समाज में होने वाले परिवर्तनों को प्रतिबिंबित करता है। विभिन्न समय पर उभरती चुनौतियों के जवाब में राजनीतिक सिद्धांत तैयार किए जाते हैं। राजनीतिक सिद्धांत के हेगेल का प्रतीकात्मक लक्षण इस सन्दर्भ में कि "मिनर्वा का उल्लू तब उड़ान भर लेता है जब अँधेरे की परछाई बढ़ जाती है", बहुत उपयुक्त है।

हालांकि हमें यह याद रखना अच्छा होगा कि राजनीतिक चिंतन, जो कि सामाजिक चुनौतियों के कारण भी उभरता है, समय के साथ साथ स्थान के साथ भी बंधा हुआ है और इसलिए, सिद्धांत से अलग है जो ऐसी बाधाओं को तोड़ता है और साबित करता है कि राजनीति की अद्भुत घटनाओं को अलग अलग प्रकृति और उत्पत्ति के सन्दर्भ में अच्छे से समझा जा सकता है और व्याख्या की जा सकती है।

ऐसा होता है, क्योंकि विचारधारों और पूर्वाग्रहों से सिद्धांतों को परिष्कृत और शुद्ध किया जाता है और कुछ नियम स्थापित हो जाते हैं, जो केवल कालातीत ही नहीं होते हैं, बल्कि उन्हें ज्ञान भी कहा जा सकता है।

राजनीतिक सिद्धांतकार, जब सिद्धांतीकरण में लिप्त होते हैं, अपने रुझानों और कल्पनाओं की पूर्ति के लिए विचारों का पालन या उसका अनुकरण ही नहीं करते हैं, बल्कि उन आदर्शों को भी खोजते हैं जिनके विचार जीवन को बेहतर बना सकते हैं। और इस उद्यम में, सिद्धांतवादी, बड़े पैमाने पर, ठोस राजनीतिक स्थिति से प्रेरित होते हैं।

राजनीतिक सिद्धांत का इतिहास बताता है कि समाजों को प्रभावित करने वाली बीमारियों और रोगों ने सिद्धांत के साधनों को कमज़ोर किया है, जिसके माध्यम से विभिन्न स्वीकृत

सिद्धांतों और प्रथाओं और उनके पीछे की धारणाओं पर सवाल उठाये गए थे और भविष्य के लिए खाका तैयार किया गया था।

हालांकि, यह सच है कि सिद्धांत के लिए प्रोत्साहन हमेशा किसी प्रकार की विफलता और संबंधित दृढ़ विश्वास से आता है कि चीजों को बेहतर समझ के माध्यम से बेहतर किया जा सकता है और अंततः हल किया जा सकता है। इसलिए, राजनीतिक सिद्धांत का कार्य एक बेड़े की प्रतिक्रिया प्रदान करने और समझौता से संतुष्ट होने तक ही सीमित नहीं है। बल्कि, इसे समस्या की जड़ तक पहुंचना है और सिद्धांतों के वैकल्पिक नियमों के निर्माण के रूप में उपचार खोजना है। इसलिए, सिद्धांत पर किसी भी परियोजना के लिए एक 'दृष्टि' की आवश्यकता होती है जिसके माध्यम से एक सिद्धांतवादी न केवल हाथों की समस्याओं के बारे में सोच सकता है, बल्कि उनके आगे भी जा सकता है।

बात यह है कि कला या काव्य से राजनीतिक सिद्धांत को अलग किया जा सकता है। दृष्टि, प्रतिबिंब और अफवाहों के संदर्भ में, राजनीतिक सिद्धांत और कला और काव्य जैसे अन्य रचनात्मक गतिविधियों के बीच बहुत अंतर नहीं है। लेकिन जो बात एक राजनीतिक सिद्धांतकार से कवि को अलग करती है वह है उसका आग्रह और खोज, जो कि एक निश्चित प्रकार का होता है, जबकि एक कवि का अपना संसार होता है और काव्य के सहज स्वच्छंदता उसमें होती है। इसलिए, यह रचनात्मकता नहीं है, बल्कि चेतना है जो कि काव्य को सिद्धांत बनने की स्थिति से नकारती है।

## 1.4 राजनीतिक सिद्धांत की परिभाषा की दिशा में

राजनीतिक सिद्धांत अलग-अलग लोगों द्वारा विभिन्न तरीकों से परिभाषित किया गया है। परिभाषाएं इसके गठबंधन तत्वों के जोर और समझ के आधार पर भिन्न होती हैं। राजनीतिक सिद्धांत की सेबाइन द्वारा दी गई प्रसिद्द परिभाषा यह है कि यह कुछ ऐसा है जिसमें विशेष रूप से तथ्यात्मक, कारण और मूल्यवान जैसे कारक शामिल हैं। हेकर के अनुसार, राजनीतिक सिद्धांत 'निराशाजनक और अनिच्छुक गतिविधि है। यह दार्शनिक और वैज्ञानिक ज्ञान का एक अंग है, चाहे वह मूल रूप से कब और कहाँ लिखा गया हो, इस दुनिया की हमारी समझ को बढ़ा सकता है जिसमें हम आज रहते हैं और जिसमें हम कल भी रहेंगे।

इसलिए, कोई यह कह सकता है कि राजनीतिक सिद्धांतों का हमारा अर्थ राजनीतिक घटनाओं के एक वर्ग के बारे में कुछ स्पष्टीकृत सिद्धांत के साथ प्रस्तावों का एक सुसंगत समूह है। इसका तात्पर्य है कि एक सिद्धांत, विचार के विपरीत, उस परिस्थिति में एक साथ ढेर सारी घटनाओं पर विचार नहीं कर सकता है, और केवल श्रेणी या प्रकार के मुद्दों से संबंधित होगा।

**बोध प्रश्न 1**

**नोटः** क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिये गये स्थान का उपयोग करें।
ख) अपने उत्तर को इकाई के अंत में दिये गये उत्तर से मिलायें।

1) राजनीतिक सिद्धांत से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

2) राजनीतिक सिद्धांत की दूसरे अंतर-सम्बंधित शब्दों से अंतर करें।

.....

.....

.....

.....

.....

## 1.5 मुख्य सैद्धांतिक अवधारणाओं के महत्व

एक पाठक जब पहली बार राजनीतिक सिद्धांत से परिचित होता है, तो यह सोच सकता है कि समाज के चरित्र और प्रकृति को समझने के लिए अमूर्त अवधारणाओं के बजाय संस्थाओं का अध्ययन करना पर्याप्त है। जबकि संस्थानों का अध्ययन तभी संभव है, जब किसी को यह एहसास हो कि संस्थागत व्यवस्था अलग-अलग समाज में भिन्न होती है क्योंकि वह अलग-अलग प्रकार के विचारों पर आधारित होती हैं। यह वास्तविकता हमें इस मामले के बीचों बीच में ले जाती है कि अधिक महत्वपूर्ण क्या है, वास्तविकता या विचार, तथ्य या अवधारणाएं क्या विचार वास्तविकता को प्रतिबिंबित करते हैं या वास्तविकता विचारों पर आधारित होती है?

### 1.5.1 क्या राजनीतिक सिद्धांत मृत हो चुका है?

बीसवीं शताब्दी के मध्य में, कई पर्यवेक्षकों ने आसानी से राजनीतिक सिद्धांत की मृत्युलेख लिखी। कुछ ने इसकी गिरावट की बात की। दूसरों ने इसकी मौत की घोषणा की। किसी ने कहा कि राजनीतिक सिद्धांत आज मुसीबत से घिरा हुआ है। यह निराशाजनक विचार इसलिए फैला क्योंकि राजनीतिक सिद्धांत में शास्त्रीय परंपरा, बड़े पैमाने पर, अनुभवजन्य परीक्षण के नियंत्रण से परे मूल्य निर्णय के साथ मिली जुली है। मानक सिद्धांत की आलोचना 1930 के दशक में तार्किक सकारात्मकवादियों से हुई थी और बाद में व्यवहारवादियों द्वारा भी आलोचना की गई। ईस्टन का तर्क था कि चूंकि राजनीतिक सिद्धांत एक प्रकार के ऐतिहासिक रूप से सम्बंधित है, इसलिए यह अपनी रचनात्मक भूमिका खो चुका है। उन्होंने विलियम डनिंग, चार्ल्स एच. मक्लेवेन और जॉर्ज एम. सेबाइन को राजनीतिक सिद्धांत में इतिहासवाद को लाने के लिए दोषी ठहराया। इस तरह के राजनीतिक सिद्धांत ने छात्रों को मूल्यपरक सिद्धांत के गंभीर अध्ययन से वंचित कर दिया है और राजनीतिक सिद्धांत में इतिहास और दर्शन के तत्वों को अस्वीकार कर दिया।

ईस्टन ने आम तौर पर राजनीतिक सिद्धांत की गिरावट और विशेष रूप से ऐतिहासिकता में गिरावट के कारणों की जांच की। सबसे पहले, और सबसे महत्वपूर्ण, राजनीतिक वैज्ञानिकों के बीच प्रवृत्ति उनके समय के नैतिक प्रस्तावों के अनुरूप है जो रचनात्मक दृष्टिकोण के नुकसान की ओर अग्रसर हैं। इस बात पर ज़ोर देना है कि किसी के गुणों को उजागर करना और प्रकट करना जो कि यह दर्शाता है कि अब इन नैतिक मूल्यों की योग्यता की जांच करने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन केवल उनके 'मूल, विकास और सामाजिक प्रभाव' को समझना है। मौजूदा मानों का समर्थन करने के लिए इतिहास का उपयोग किया जाता है। दूसरी बात, सिद्धांत को जो ख़ास बातें इतिहास से प्राप्त होती हैं उसके लिए नैतिक सापेक्षतावाद ज़िम्मेदार है। कुल मिलाकर, उन्होंने राजनीतिक सिद्धांत की गिरावट के चार कारण दिए– ऐतिहासिकतावाद, नैतिक सापेक्षतावाद, अति तथ्यात्मकतावाद और सकारात्मकतावाद।

## 1.5.2 राजनीतिक सिद्धांत का पुनरुत्थान

1930 के दशक में, राजनीतिक सिद्धांत ने साम्यवाद, फासीवाद और नाज़ीवाद के साम्राज्यवादी सिद्धांतों के विरोध में उदार लोकतांत्रिक सिद्धांत की रक्षा के उद्देश्य से विचारों के इतिहास का अध्ययन करना शुरू किया। लासवेल ने मानव व्यवहार को नियंत्रित करने के अंतिम उद्देश्य के साथ एक वैज्ञानिक राजनीतिक सिद्धांत स्थापित करने की कोशिश की, जिससे मरियम द्वारा दिए गए लक्ष्य और दिशा को आगे बढ़ाया गया। शास्त्रीय परंपरा के विपरीत, वैज्ञानिक राजनीतिक सिद्धांत निर्धारित करने के बजाए वर्णन करता है। पारंपरिक अर्थ में राजनीतिक सिद्धांत आरेण्ड्ट, थिओडोर अडोर्नो, मार्क्यूस और लियो स्ट्रॉस के कार्यों में जीवित था। अमेरिकी राजनीतिक विज्ञान के भीतर व्यापक विचारों से उनके विचार पूरी तरह से भिन्न थे, क्योंकि वे उदार लोकतंत्र, विज्ञान और ऐतिहासिक प्रगति में विश्वास करते थे। वे सभी राजनीति में राजनीतिक मसीहावाद और उदारवाद को अस्वीकार करते हैं। आरेण्ड्ट ने मुख्य रूप से मानव की विशिष्टता और जिम्मेदारी पर ध्यान केंद्रित किया, जिसके साथ उन्होंने व्यवहारवाद में उनकी आलोचना शुरू की। उन्होंने तर्क दिया कि मानव प्रकृति में समानता के लिए व्यवहारिक खोज ने केवल इंसान को रूढ़िवादी बनाने में योगदान दिया है। स्ट्रॉस आधुनिक समय के संकट का समाधान करने के लिए शास्त्रीय राजनीतिक सिद्धांत के महत्व की पुष्टि करते हैं। वह इस प्रस्ताव से सहमत नहीं हैं कि सभी राजनीतिक सिद्धांत प्रकृति में विचारधारात्मक हैं जो किसी दिए गए सामाजिक-आर्थिक हित को प्रतिबिंबित करते हैं, क्योंकि ज्यादातर राजनीतिक विचारक सामाजिक अस्तित्व में सही क्रम के सिद्धांतों को समझने की संभावना से प्रेरित होते हैं। एक राजनीतिक दार्शनिक को मुख्य रूप से सच्चाई में रुचि रखनी पड़ती है। पिछले दर्शनों को समेकन और स्थिरता पर नजर रखने के साथ अध्ययन किया जाता है। राजनीतिक सिद्धांत में शास्त्रों की रचना करने वाले लेखक बेहतर हैं क्योंकि वे प्रतिभाशाली थे और उनका लेखन नपा तुला होता था। स्ट्रॉस 'नए' राजनीतिक विज्ञान के तरीकों और उद्देश्यों की जांच करते हैं और उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि शास्त्रीय राजनीतिक सिद्धांत की तुलना में यह दोषपूर्ण था, विशेष रूप से अरस्तु की तुलना में। अरस्तु के अनुसार, एक राजनीतिक दार्शनिक या राजनीतिक वैज्ञानिक को निष्पक्ष होना चाहिए, क्योंकि उसके पास मानव की अंतिम अवस्था तक की अधिक व्यापक और स्पष्ट समझ होती है। राजनीतिक विज्ञान और राजनीतिक दर्शन समान हैं, क्योंकि सैद्धांतिक और व्यावहारिक पहलुओं से युक्त विज्ञान दर्शन के समान है। अरस्तु का राजनीतिक विज्ञान भी राजनीतिक वस्तुओं का मूल्यांकन करता है, वास्तविक मामलों में दूरदृष्टि की स्वायत्तता का बचाव करता है और राजनीतिक कार्रवाई को अनिवार्यतः नैतिक रूप से देखता है। ये परिसर व्यवहारवाद से इनकार करते हैं, क्योंकि यह राजनीतिक दर्शन को राजनीतिक विज्ञान से अलग करता है और सैद्धांतिक और व्यावहारिक विज्ञान के बीच भेद को प्रतिस्थापित करता है। ऐसी मान्यता है कि व्यावहारिक विज्ञान सैद्धांतिक विज्ञानों से प्राप्त हुए हैं, लेकिन उस प्रकार से नहीं जिस प्रकार से शास्त्रीय परंपरा को दर्शाया जाता है। सकारात्मकवाद की तरह व्यवहारवाद विनाशकारी है, क्योंकि यह अंतिम सिद्धांतों के बारे में ज्ञान से इनकार करता है। उसका दिवालियापन स्पष्ट है, क्योंकि वह असहाय हैं, गलत से सही में अंतर करने में असमर्थ हैं, सर्वसत्तावाद के उदय के सन्दर्भ में अन्याय से न्याय के उदय के सन्दर्भ में देखता है। स्ट्रॉस ईस्टन का विरोध करते हैं और उनके ऐतिहासिकवाद पर आरोप लगाते हैं कि नया विज्ञान राजनीतिक सिद्धांत में गिरावट के लिए ज़िम्मेदार है, क्योंकि इसने मानक मुद्दों की समग्र उपेक्षा के कारण पश्चिम के सामान्य राजनीतिक संकट की ओर इशारा किया और उत्साहित किया। वोगेलिन राजनीतिक विज्ञान और राजनीतिक सिद्धांत को अविभाज्य मानते हैं और यह भी कि एक के बिना दूसरा संभव नहीं है। राजनीतिक सिद्धांत विचारधारा, यूटोपिया या वैज्ञानिक पद्धति नहीं है, बल्कि व्यक्तिगत और समाज दोनों में सही क्रम की एक अनुभवी विज्ञान पद्धति है। इसे गंभीर और अनुभवजन्य

रूप से क्रम की समस्या को अलग करना होता है। सिद्धांत समाज में मानव अस्तित्व के बारे में केवल एक विचार मात्र नहीं है, बल्कि यह अनुभवों के एक निश्चित वर्ग की सामग्री की व्याख्या करके अस्तित्व के अर्थ को तैयार करने का प्रयास है। इसका तर्क मनमाने ढंग का नहीं है, लेकिन एकत्रित अनुभवों से इसकी वैधता प्राप्त करता है जिसमें इसे स्थायी रूप से अनुभवजन्य नियंत्रण के लिए संदर्भित होना चाहिए।

**बोध प्रश्न 2**

**नोटः** क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ख) अपने उत्तर को इकाई के अंत में दिये गये उत्तर से मिलायें।

1) राजनीतिक सिद्धांत की प्रासंगिकता के बारे में बहस पर चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

## 1.6 राजनीतिक सिद्धांत में दृष्टिकोण

सिद्धांतकारों द्वारा उपयोग में लाए जाने वाले राजनीतिक सिद्धांत की विभिन्न धारणाओं को पहचानना और वर्गीकृत करना काफी मुश्किल है। कठिनाई सिद्धांतकारों के बीच अभ्यास करने के लिए प्रवृत्ति से उत्पन्न होती है, जिसमें वे विभिन्न अवधारणाओं और परंपराओं पर चित्रण शुरू करते हैं। यह और भी सत्य है, जैसा कि हम बाद में देखेंगे, समकालीन राजनीतिक सिद्धांत के साथ, जो इसके पहले थे। अतीत में, सिद्धांतवादियों ने कुछ हद तक सिद्धांत में अवधारणा की शुद्धता बनाए रखी- निर्माण और शायद ही कभी उनके द्वारा चुने गए ढांचे को आगे बढ़ाया। लेकिन यह समकालीन समय पर लागू नहीं होता है, जो सिद्धांत की एक दस्ते की पहचान है जो प्रकृति में संकर दिखाई देता है। लेकिन व्यापक रूप से कहना चाहें तो, राजनीतिक सिद्धांत में तीन अलग-अलग धारणाएं उभरीं जिनके आधार पर अतीत और वर्तमान दोनों सिद्धांतों को अवधारणाबद्ध, जांच और मूल्यांकन किया जा सकता है। वे हैंः ऐतिहासिक, सामान्य, और अनुभवजन्य।

### 1.6.1 ऐतिहासिक दृष्टिकोण

कई सिद्धांतकारों ने इतिहास से अंतर्दृष्टि और संसाधनों के आधार पर सिद्धांत - निर्माण का प्रयास किया है। सेबाइन ऐतिहासिक अवधारणा के मुख्य प्रतिपादकों में से एक हैं। उनकी राय में, एक प्रश्न, जैसे कि, राजनीतिक सिद्धांत की प्रकृति क्या है, का वर्णन वर्णनात्मक रूप से किया जा सकता है; इस तरह, सिद्धांत ने ऐतिहासिक घटनाओं और विशिष्ट परिस्थितियों का जवाब दिया है। दूसरे शब्दों में, इस परिप्रेक्ष्य में, राजनीतिक सिद्धांत स्थिति पर निर्भर हो जाता है, जिसमें प्रत्येक ऐतिहासिक स्थिति एक समस्या निर्धारित करती है, जो बदले में, सिद्धांत द्वारा तैयार किए गए समाधानों का ख्याल रखती है। राजनीतिक सिद्धांत की यह अवधारणा परंपरा की तुलना में अलग है। कोबबान भी यह मानते हैं कि परंपरागत विधि, जिसमें इतिहास का बोध पूरी तरह से दिया जाता है, राजनीतिक सिद्धांत की समस्याओं पर विचार करने का सही तरीका है। यह सच है कि अतीत, सिद्धांत निर्माण के हमारे प्रयास में एक मूल्यवान गाइड के रूप में कार्य करता है, और हमें सिखाता है कि

हम अपनी मौलिकता के बारे में भी बहुत अधिक सुनिश्चित न हों। यह इस तरफ भी इशारा करता है कि अब यह संभव हो गया है कि अन्य तरीकों पर भी प्रकाश डाला जाए जो कि केवल फैशनेबल और प्रभावशाली नहीं होगा। ऐतिहासिक ज्ञान हमें पिछली पीढ़ियों की असफलताओं के बारे में भी संवेदनशील बनाता है और वर्तमान के सामूहिक ज्ञान के साथ संबंध रखता है और हमारे अंदर कल्पनाशीलता को बढ़ावा देता है।

इसके ऊपर और पहले, ऐतिहासिक अवधारणा भी हमारे मानक दृष्टि में महत्वपूर्ण योगदान देती है। विचारों का इतिहास हमें बता सकता है कि हमारा सामाजिक और राजनीतिक ब्रह्मांड उन चीज़ों का एक उत्पाद है जिनकी जड़ अतीत में है। और उन्हें बेहतर ढंग से हमें पता चलेगा कि हमारे पास कैसे कुछ निश्चित मूल्य, मानदंड और नैतिक अपेक्षाएं हैं और वे कहां से आए हैं। इस तरफ की समझने की क्षमता हमारे अंदर होने के कारण ही, इन मूल्यों से पूछताछ करना और उनकी उपयोगिता का गंभीर आंकलन करना संभव है। लेकिन इस धारणा के साथ अंधा लगाव मूर्खता के बिना नहीं है। राजनीतिक सिद्धांत नामक योजना की नवीनता यह है कि इसकी प्रत्येक विशिष्ट स्थिति अद्वितीय है, नयी चुनौतियों के रहस्य से जुड़ा है। इसलिए, अतीत के मूल्य को कभी-कभी समाप्त कर दिया जाता है और यहां तक कि बाधा भी हो सकती है, अगर कोई इस पहलू से अनजान है। इसलिए, एक निश्चित स्तर से परे राजनीतिक सिद्धांत में इस दृष्टिकोण की उपयोगिता संदिग्ध है क्योंकि यह हमेशा पुराने समय से विचारों से बाहर निकलने के लिए तैयार है। विचारों के सूचक मूल्य रहते हैं, लेकिन सैद्धांतिक कार्य काफी कम हो जाता है। इसलिए, राजनीतिक सिद्धांत में इस दृष्टिकोण की उपयोगिता एक निश्चित स्तर से परे है और यह संदिग्ध है, क्योंकि यह हमेशा पुराने समय से पुराने विचारों से बंधा हुआ है।

### 1.6.2 मानक अथवा निर्देशात्मक दृष्टिकोण

राजनीतिक सिद्धांत में मानक धारणा विभिन्न नामों से जानी जाती है। कुछ लोग इसे दार्शनिक सिद्धांत कहते हैं, जबकि अन्य इसे नैतिक सिद्धांत के रूप में संदर्भित करते हैं। मानक अवधारणा इस धारणा पर आधारित है कि सिद्धांत और उद्देश्य, तर्क, अंतर्दृष्टि और अनुभवों की सहायता से तर्क, उद्देश्य और अंत के संदर्भ में दुनिया और इसकी घटनाओं का अर्थ लिया जा सकता है। दूसरे शब्दों में, यह मूल्यों के बारे में दार्शनिक अटकलों की एक परियोजना है। ऐसे प्रश्न, जो मानकवादियों द्वारा पूछे जाते हैं, होंगेः राजनीतिक संस्थानों का अंत क्या होना चाहिए? व्यक्तिगत और अन्य सामाजिक संगठनों के बीच संबंधों को क्या सूचित करना चाहिए? समाज में कौन सी व्यवस्था मॉडल या आदर्श बन सकती है और नियमों और सिद्धांतों को किस पर शासन करना चाहिए? कोई चाहे तो यह कह सकता है कि उनकी चिंताएं नैतिक हैं और इसका उद्देश्य आदर्श प्रकार का निर्माण करना है। इसलिए, ये सिद्धांतवादी ही हैं जिन्होंने हमेशा अपनी शक्तिशाली कल्पना के माध्यम से राजनीतिक विचारों के क्षेत्र में 'यूटोपिया' की कल्पना की है। सामान्य राजनीतिक सिद्धांत राजनीतिक दर्शन की ओर बहुत ज़्यादा निर्भर करता है, क्योंकि इससे इसके अच्छे जीवन का ज्ञान प्राप्त होता है और इसे पूर्ण मानदंड बनाने के अपने प्रयास में ढांचे के रूप में भी उपयोग किया जाता है। असल में, उनके औपचारिक हथियारों को राजनीतिक दर्शन से ले लिया जाता है और इसलिए, वे हमेशा अवधारणाओं के बीच अंतर-संबंध स्थापित करने की कोशिश करते हैं और घटनाओं के साथ-साथ उनके सिद्धांतों में सुसंगतता की तलाश करते हैं, जो दार्शनिक दृष्टिकोण के विशिष्ट उदाहरण हैं। लियो स्ट्रॉस ने दृढ़ता से सिद्धांत के लिए मामले की वकालत की है और तर्क दिया है कि प्रकृति द्वारा राजनीतिक चीजें अनुमोदन या अस्वीकृति के अधीन हैं और अच्छे या बुरे और न्याय या अन्याय को छोड़कर किसी भी अन्य शर्तों में उनका न्याय करना मुश्किल है। लेकिन मानदंडवादियों के साथ

समस्या ये है कि वे मूल्यों का मूल्यांकन करते समय, वे उन्हें सार्वभौमिक और पूर्ण के रूप में चित्रित करते हैं। उन्हें एहसास नहीं है कि भलाई के लिए पूर्ण मानक बनाने की उनकी इच्छा बिना संकट के नहीं है। और वह नैतिक मूल्य समय और स्थान के सापेक्ष एक भारी व्यक्तिपरक सामग्री के साथ हैं, जो पूर्ण मानक के किसी भी निर्माण की संभावना को रोकता है। हमें अच्छी तरह से यह याद रखना होगा कि यहां तक कि एक राजनीतिक सिद्धांतवादी भी दुनिया के आंकलन में एक व्यक्तिपरक साधन है और यह अंतर्दृष्टि कई सशर्त कारकों से हैं, जो प्रकृति में विचारधारात्मक हो सकती हैं।

अनुभवजन्य सिद्धांत के प्रतिपादकों ने मानकवाद की निम्न बात के लिए आलोचना की:

1) मूल्यों की सापेक्षता

2) नैतिकता और मानदंडों का सांस्कृतिक आधार

3) प्रतिष्ठानों में वैचारिक विषय सूची, एवं

4) परियोजना का सार और यूटोपियन प्रकृति

लेकिन अतीत के गहराई में, जो मानक सिद्धांत का ज़ोरदार समर्थन किया करते थे, उन्होंने हमेशा अपने सिद्धांतों को अपने समय की वास्तविकता की समझ के साथ जोड़ने की कोशिश की। हाल के दिनों में, नकारात्मक सिद्धांत के भीतर पुरानी संवेदनशीलता फिर से उभरी है और अच्छे जीवन और अच्छे समाज के भाव को विधिवत और अनुभवजन्य चतुरता से मेल किया गया है। जॉन रॉल्स की पुस्तक 'ए थ्योरी ऑफ़ जस्टिस' एक ऐसा मामला है जो अनुभवजन्य निष्कर्षों में तार्किक और नैतिक राजनीतिक सिद्धांत को सहारा देने का प्रयास करता है। रॉल्स, अपनी कल्पना के साथ, वितरण न्याय और कल्याणकारी राज्य के बारे में असली दुनिया की चिंताओं के साथ मानक दार्शनिक तर्कों को जोड़ने के लिए 'मूल स्थिति' बनाते हैं।

### 1.6.3 अनुभवजन्य दृष्टिकोण

बीसवीं शताब्दी में जिस राजनीतिक सिद्धांत ने प्रभुत्व किया, वह आदर्शता नहीं है, लेकिन एक और अवधारणा जिसे अनुभवजन्य राजनीतिक सिद्धांत के रूप में जाना जाता है, जो कि अनुभवजन्य अवलोकनों से सिद्धांतों को उत्पन्न करता है। अनुभवजन्य राजनीतिक सिद्धांत उन सिद्धांतों को ज्ञान की स्थिति प्रदान करने से इंकार कर देता है, जो मूल्य निर्णय में शामिल होते हैं। स्वाभाविक रूप से, इसलिए, मानक राजनीतिक सिद्धांत को केवल 'वरीयताओं' और 'मत की अभिव्यक्ति' के बयान के रूप में उजागर किया जाता है। मूल्य-मुक्त सिद्धांत के लिए अभियान राजनीतिक सिद्धांत के क्षेत्र को वैज्ञानिक और उद्देश्य के क्षेत्र में शुरू करने के लिए शुरू किया गया और इसलिए, कार्य के लिए एक और अधिक विश्वसनीय मार्गदर्शन करना। इस नयी स्थिति निर्धारण को सकारात्मकवाद के रूप में जाना जाने लगा। सकारात्मकता के उद्भव के तहत, राजनीतिक सिद्धांतकारों ने सिद्धांत के आधार पर राजनीतिक घटनाओं के बारे में वैज्ञानिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए तैयार किया जिसे अनुभवी रूप से सत्यापित और साबित किया जा सकता था। इस प्रकार, उन्होंने समाज के प्राकृतिक विज्ञान को बनाने का प्रयास किया और इस प्रयास में, दर्शन को विज्ञान का एक मात्र जोड़ा गया। सिद्धांत के इस तरह के एक स्पष्टीकरण ने एक सिद्धांतवादी की भूमिका को एक अनिच्छुक पर्यवेक्षक के रूप में चित्रित किया, सभी प्रतिबद्धताओं को समाप्त कर दिया और सभी मूल्यों को निकाला।

राजनीतिक सिद्धांत में यह अनुभवजन्य परियोजना ज्ञान के अनुभववादी सिद्धांत पर आधारित थी, जिसका दावा है कि सत्य और झूठ का गठन करने के लिए पूर्ण विकसित मानदंड है। इस मानदंड का सार प्रयोग और सत्यापन सिद्धांत में दर्ज है।

जब राजनीतिक सिद्धांत इस प्रभाव में पड़ रहा था, तो एक तथाकथित क्रांति शुरू हुई और 'व्यवहारिक क्रांति' के रूप में लोकप्रिय हो गई। यह क्रांति 1950 के दशक में राजनीतिक सिद्धांत के भीतर एक प्रभावशाली स्थिति तक पहुंच गई और नई सुविधाओं की वकालत करके अध्ययन और अनुसंधान के पूरे क्षेत्र को अपनी परिधि में ले लिया। इसमें शामिल थेः

1) विश्लेषण में मात्रात्मक तकनीक को प्रोत्साहित करना
2) मानक ढांचे के उन्मूलन और अनुभवजन्य अनुसंधान के प्रचार जो सांख्यिकीय परीक्षणों के लिए अतिसंवेदनशील हो सकते हैं
3) विचारों के इतिहास की स्वीकृति और अस्वीकृति
4) सूक्ष्म अध्ययन पर ध्यान केंद्रित करना क्योंकि यह अनुभवजन्य उपचार के लिए अधिक सक्षम था
5) विशेषज्ञता का गौरवगान
6) व्यक्ति के व्यवहार से डाटा प्राप्त करना और
7) मूल्य-मुक्त शोध के लिए आग्रह करना

वास्तव में, व्यवहारिक वातावरण को एक विरोधी सिद्धांत की अवस्था द्वारा अधिभारित किया गया था और जिन लोगों ने परंपरागत अर्थ में सिद्धांत पर हमला किया था, वो केवल एक का दिन था। थ्योरी को हास्यास्पद बना दिया गया था और विचारधारा को, अमूर्तता, आध्यात्मिक तत्वों और यूटोपिया के समानार्थी बना दिया गया था। कुछ साहसीवादियों ने उद्यम के रूप में सिद्धांत के लिए विदाई की भी वकालत की। वस्तुनिष्ठ ज्ञान प्राप्त करने के उत्साह में, उन्होंने वास्तविकता के एक पहलू को भी कम कर दिया और विचार और वास्तविकता के बीच भेद को धुंधला कर दिया। इस प्रकार, उन्होंने जल्द ही विज्ञान के कुछ दार्शनिकों के क्रोध और आग का वे लोग शिकार हुए जिन्होंने विज्ञान के उत्तर-सकारात्मकवादी दृष्टिकोण के लिए एक नई दूरदर्शिता की पेशकश की। कार्ल पॉपर ने वैज्ञानिक ज्ञान के एक मानदंड के रूप में 'मिथ्याकरण' के सिद्धांत को निर्धारित करके नई अवस्था को जन्म दिया और तर्क दिया कि सभी ज्ञान अनुमानित, टिकाऊ और अंतिम सत्य से बहुत दूर थे। वास्तविक मोड़ या सफलता विज्ञान के दर्शन में तब आई, जब थॉमस कुन्ह, इम्रे लाकाटोस और मैरी हेसे ने तथाकथित वैज्ञानिक सिद्धांत को ध्वस्त कर दिया। कुन्ह की किताब, "वैज्ञानिक क्रांति की संरचना", ने सकारात्मक सिद्धांत के शोक और विफलताओं को बाहर निकालने का मार्ग प्रशस्त किया यह दर्शाता है कि कैसे सभी विचार अंतर-व्यक्तिपरक संचार के साधन के रूप में विचारशील और व्याख्या पर निर्भर थे। कुन्ह ने जोरदार तर्क दिया कि यह न केवल तर्कहीन सम्मेलन था जो कि शब्दार्थगत ढांचे के निर्माण के पीछे छिपे हुए थे, लेकिन व्याख्या और आलोचना द्वारा तैयार तर्कसंगत व्याख्यान द्वारा भी सूचित किया गया था।

**बोध प्रश्न 3**

**नोटः** क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ख) अपने उत्तर को इकाई के अंत में दिये गये उत्तर से मिलायें।

1) राजनीतिक सिद्धांत की अनुभवजन्य और मानक धारणाओं के बीच अंतर करें।

.....

.....

.....

## 1.6.4 समकालीन दृष्टिकोण

समकालीन राजनीतिक सिद्धांत ने 1980 और 90 के दशक में बौद्धिक दृश्य पर अपनी उपस्थिति बनाई। ज्यादातर सिद्धांत में स्थापित परंपराओं के खिलाफ प्रतिक्रिया के रूप में और ज्ञान और विज्ञान जैसे प्रबोधन की श्रेणियां डालीं जिस पर कि राजनीतिक सिद्धांत में सभी परंपराओं को एक गंभीर और खोज आलोचना से बांधे हुए थे। उन्होंने कई पहलुओं को लाया जिन्हें बारीकी से जांच के तहत राजनीतिक सिद्धांत द्वारा सत्य की नींव के रूप में अपना लिया गया और नए सामाजिक और राजनीतिक संसार को समझने और विचार करने के लिए नए सिद्धांतों को निर्धारित किया गया जिनमें से कुछ ने "उत्तर-आधुनिक स्थिति" को बनाये रखा। हालांकि, यह विश्लेषण के एक व्यापक ढाँचे के तहत आज दिखाई देने वाले विभिन्न सैद्धांतिक रुझानों की दमन करने के लिए व्यक्तिपरक होगा। उदाहरण के लिए, सांप्रदायिकता और बहुलसंस्कृतिवाद के साथ सामूहिकतावाद और आधुनिकवाद के बाद चर्चा करना उनके खिलाफ बौद्धिक अत्याचार और उनकी चिंताओं और प्रतिबद्धताओं के लिए होगा। उदहारण के तौर पर, समुदायवाद और बहुलसंस्कृतिवाद के साथ उत्तर-संरचनावाद और उत्तर-आधुनिकवाद पर उनकी चिंताओं और प्रतिबद्धताओं के खिलाफ बौद्धिक अत्याचार के साथ मिलकर विचार विमर्श करना क्योंकि उनके इतिहास, उनकी मानक चिंता के साथ-साथ सैद्धांतिक उपकरण और अनुभवजन्य संदर्भों में एक बड़ी असमानता और मोड़ है। लेकिन फिर भी कोई सैद्धांतिक क्षेत्र की योजना बना सकता है जिस पर राजनीतिक सिद्धांत के साथ उनकी भागीदारी होती है। व्यापक जोर जो कई समकालीन सिद्धांतकारों और सिद्धांतों को एक साथ लाता है, दोनों को एक साथ निम्नलिखित के तहत रख सकते हैं:

क) **सार्वभौमिकता के लिए विपक्ष**

समकालीन समय में राजनीतिक सिद्धांतीकरण अतीत के राजनीतिक सिद्धांत के सार्वभौमिक दावों के अधीन हो चुका है, इस परंपरा के बावजूद भी कि वे महत्वपूर्ण सूक्ष्म परीक्षण से संबंधित थे। उन्होंने सामाजिक और अस्थायी संदर्भ के बिना उदार सार्वभौमिकता प्रकट की है, और उनकी राय में, पश्चिमी समाज के अनुभव पर आधारित गुप्त 'विशिष्टता' ने सार्वभौमिक मूल्यों और मानदंडों के रूप में स्वांग रचा है। वे तर्क देते हैं कि सार्वभौमिक सिद्धांतों के लिए अपील मानकीकरण के समान हैं; इसलिए, न्याय का उल्लंघन जो किसी विशेष समुदाय या जीवन के रूप में निहित हो सकता है और जो अपने मूल्यों और मानक सिद्धांत को सम्मिलित कर सकता है। हाल के दिनों में सांप्रदायिक सिद्धांत और बहुलसंस्कृतिवाद सिद्धांत ने इसे काफी बल दिया है और इस तथाकथित सार्वभौमिक सिद्धांतों को 'विशिष्टतावादी' का केंद्र कहा गया, जिसने हमेशा मानव जाति के एकमात्र दृष्टिकोण के रूप में 'अच्छाई' का एक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है।

ख) **बड़े विवरणों की आलोचना**

उदारवादी और मार्क्सवादी, दोनों किस्मों के बड़े विवरण इस आधार पर आलोचना के घेरे में उभर कर आ गये हैं कि उदारवाद और मार्क्सवाद द्वारा वास्तविकता और सत्य की कोई अतिव्यापी या अनुवांशिक नींव नहीं है, क्यूंकि समकालीन सिद्धांतों में से कुछ को 'मूल सिद्धांत विरोधी' घोषित किया गया है, जैसे, राज्य संप्रभुता और शक्ति। उनके साथ निष्पक्षता होने पर, वे सभी मूलभूत बातें अस्वीकार नहीं करते हैं, बल्कि केवल अनुवांशिक बातें अस्वीकार करते हैं। बाद के आधुनिकतावादी बड़े विवरणों पर हमला करने में सबसे आगे हैं और तर्क देते हैं कि उद्देश्य पूर्व निर्धारित वास्तविकता या एक उद्देश्यपूर्ण सामाजिक वस्तु नहीं है जो इस तरह के बड़े विवरणों और उनके प्रारूपों का समर्थन कर सकता है।

ग) **उत्तर-सकारात्मकवाद**

यह राजनीतिक सिद्धांत में व्यवहारवादियों द्वारा समर्थित सामाजिक विज्ञान में मूल्य तटस्थता के साथ पहले की प्रतिबद्धता का सबूत है। समकालीन सिद्धांत मूल्य विहीन संस्थाओं को बेकार कहते हैं और मानते हैं कि राजनीतिक सिद्धांत एक स्वाभाविक रूप से प्रामाणिक और राजनीतिक रूप से लगी हुई परियोजनाएं हैं, जो कि भविष्य के लिए तैयारियों और एक दूरदृष्टि प्रदान करने वाला माना जाता है।

घ) **अनुभवजन्य और तुलनात्मक**

समसामयिक सिद्धांतवादियों के बीच उत्तर-सकारात्मक जोर उन्हें किसी सामान्यीकरण के प्रयास से पहले अनुभवजन्य और तुलनात्मक दृष्टिकोण की आवश्यकता की वकालत करने से नहीं रोकता है। बहुलसंस्कृतिवाद एक ऐसा उदाहरण है, जो कि विषय वस्तु के प्रति संवेदनशील है। वास्तव में, इस तरह के अनुभवजन्य – तुलनात्मक कार्यप्रणाली संस्कृतियों और महाद्वीपों में व्यापक सामान्यीकरण पर एक जांच की तरह होगी। समकालीन राजनीतिक सिद्धांत से आने वाली नई अंतर्दृष्टि के बावजूद, वे कई कमजोरियों से पीड़ित हैं। शास्त्रीय राजनीतिक सिद्धांत के विपरीत, अभी तक तुलनात्मक-आनुभविक जांच नहीं हुई है और सिद्धांतकारों के बीच अन्य सिद्धांतकारों का अनुकरण करने की प्रवृत्ति बहुत ज़्यादा है। आदर्शवादी उद्यम तभी उपयोगी हो सकता है जब वह वास्तविकता से बंधा हो। इसलिए, समाज और राजनीति की वास्तविक चुनौती अनुभवजन्य वास्तविकता के आधार पर मानक सिद्धांत में निहित है। यह एकमात्र तरीका है, जिसमें केवल सामान्यीकरण के साथ एक वैध राजनीतिक सिद्धांत उभर सकता है, जो आधुनिकतावादी दृष्टिकोण और उसकी सापेक्षता और प्रसार की कमजोरियों को भी दूर करेगा जो हमेशा राजनीतिक परियोजनाओं के लिए जन्मजात नहीं होते हैं। इससे लाभ भी हो सकता है, शेल्डन वोलिन इसे 'महाकाव्य सिद्धांत' कहते हैं।

**बोध प्रश्न 4**

**नोटः** क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ख) अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिये गये उत्तर से करें।

1) कुछ व्यापक चुनौतियों पर चर्चा करें, जो समकालीन सिद्धांतकारों को एक साथ लाते हैं।

.....

.....

.....

## 1.7 सारांश

चूंकि हमारे पास राजनीतिक सिद्धांत की अलग-अलग अवधारणाएं हैं, इसलिए वे विभिन्न परंपराओं में अलग-अलग अर्थ प्राप्त करते हैं। हमने देखा है कि राजनीतिक सिद्धांत क्यों उभरता है और यह कैसे राजनीति में मानव हस्तक्षेप को सुविधाजनक बनाकर इतिहास को आकार देता है और कैसे तय करता है। सिद्धांतकारों द्वारा आयोजित की जाने वाली विभिन्न अवधारणाओं पर भी चर्चा की गई है और उनकी दिक्कतों पर प्रकाश डाला गया है। समकालीन उद्यम, जो सामाजिक और राजनीतिक वास्तविकता के बारे में हमारी समझ में नई दिशाएं खोलने का दावा करता है, इसकी परिसीमाओं के साथ चर्चा की गई है। पिछली

चर्चा से स्पष्ट रूप से उभरता है कि दर्शन और विज्ञान राजनीतिक सिद्धांत नामक परियोजना में एक-दूसरे को प्रतिस्थापित नहीं कर सकते हैं, यदि एक दूरदृष्टि मानव जाति की मुक्ति के लिए एक मिशन है और यहां तक कि किसी चीज़ की अनुपस्थिति का उद्देश्य 'अच्छा' या उद्देश्य 'सत्य' है तो सिद्धांत के लिए व्यावहारिक आधार को अपनाने का प्रयास किया जाना चाहिए। यह न केवल वांछनीय है, बल्कि व्युत्पन्न भी है। राजनीतिक सिद्धांत में कोई भी परियोजना जो कठोर आलोचना के अधीन होकर प्रामाणिक सोच के साथ अनुभवजन्य निष्कर्षों को एकीकृत करती है, राजनीतिक सिद्धांत में रचनात्मकता के लिए द्वार खोल सकती है जिसके आधार पर हम भविष्य में मार्गनिर्देशन कर सकते हैं।

## 1.8 संदर्भ

बैरी, बी, (1989), द सटरेंज डेथ ऑफ पाल्टिकल फिलासफी इन एसेस इन पाल्टिकल थियोरी, ऑक्सफोर्डः क्लेरेंडन प्रेस डेमोक्रेसी पावर एंड जस्टिस

बर्लिन, एस. आई., (1994), इन पाल्टिकल थ्योरी स्टिल एक्सिट इन? 'पी. लैसलेट और डब्ल्यू जी रनसीमन, फिलासफी, पालिटकस एंड सोसायटी, 2 सीरीज़ (संस्करण) ऑक्सफोर्डः ब्लैकवेल

लैस्लेट, पी और डब्ल्यू जी रनसीमन (1957), फिलासफी, पाल्टिकस एंड सोसायटी, ऑक्सफोर्डः ब्लैकवेल

सबाइन, जी. एच. (1939), वट इज पाल्टिकल थ्योरी, जर्नल ऑफ पाल्टिकस, Vol 1, No.1

## 1.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

**बोध प्रश्न 1**

1) आपके उत्तर में निम्नलिखित बिंदुओं पर प्रकाश डाला जाना चाहिए-
   - कैसे राजनीतिक सिद्धांत राजनीतिक राजनीति विज्ञान का पर्याय है।
   - राजनीतिक सिद्धांत और राजनीतिक दर्शन के अंतर-संबंध पर चर्चा करें।
   - राजनीतिक सिद्धांत पर हेगेल के उद्धरण पर विस्तृत चर्चा करें।
   - राजनीतिक सिद्धांत को परिभाषित करने में भिन्नता।
2) आपके उत्तर में यह व्याख्या होनी चाहिए कि यह राजनीतिक विज्ञान, राजनीतिक विचार और राजनीतिक विचारधारा से अलग कैसे है।

**बोध प्रश्न 2**

1) इस बहस की जांच करें कि क्या राजनीतिक सिद्धांत मृत है और लेवी स्ट्रॉस के विचारों पर भी चर्चा करें।

**बोध प्रश्न 3**

1) आपके उत्तर को स्पष्ट तथ्य-द्वंदवाद को उजागर करना चाहिए और उनकी ताकत और कमजोरियों का उल्लेख करना चाहिए।

**बोध प्रश्न 4**

1) सार्वभौमिकता के विरोध को उजागर करें, भव्य आख्यानों की आलोचना, प्रत्यक्षवाद के बाद और अनुभवजन्य और तुलनात्मक पर ध्यान केंद्रित करें।